शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दलबीर सिंह) : (क) और (ख) 1.1.83 से ब्यौरे इस प्रकार हैं :--

(क) घटिया कार्य के लिए वारित ठेकेदार	32
(ख) सीमेन्ट और बिटूमन की चोरी के लिए वारित	8
(ग) घटिया कार्यों के लिए चेतावनी जारी की गई	2
(घ) कार्य आरम्भ न करने पर वारित	1
(ङ) ठेकों के उपबन्धों का उल्लंघन करके निर्माण कार्य प्राप्त करने पर वारित	3

आनन्द स्थित ग्रामीण संस्थान का कार्यकरण

390. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या **कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) आनन्द स्थित ग्रामीण संस्थान जो एक केन्द्रीय योजना है और जिसे स्विटजरलैण्ड से 789 लाख रुपये फोर्ड फाउन्डेशन से 20 लाख रुपये की विदेशी सहायता तथा भारत सरकार से 107 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, की गतिविधियों के क्षेत्र कौन-कौन से हैं ;

(ख) इस संस्थान ने अब तक 267 स्नातकों को डिप्लोमे दिये हैं और 65 विद्यार्थी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण ले रहे हैं ।

(ख) क्या यह संस्थान डिप्लोमे भी देता है और क्या ये डिप्लोमे 198 अभ्यार्थियों को दिये जा चुके हैं और क्या 135 अभ्यार्थी यहां पर पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण ले रहे हैं;

(ग) क्या इस प्रकार के अध्ययनों की व्यवस्था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् या कोई अन्य कृषि विश्वविद्यालय नहीं कर सकता; यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं ; और

(घ) क्या यह सच है कि इस संस्थान के "बोर्ड आफ गवर्नर्स" में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद या किसी कृषि विश्वविद्यालय या उत्तर प्रदेश और बिहार का कोई विद्वान नहीं है?

कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री गोविन्द मकवाणा): (क) ग्रामीण प्रबन्ध संस्थान, आनन्द, जो समिति पंजीकरण अधिनियम के अन्तर्गत एक स्वायत्त निकाय है, की स्थापना ग्रामीण समुदाय के आर्थिक और सामाजिक विकास में लगी सहकारी समितियों और अन्य ग्रामीण उत्पादक संगठनों के लिये शिक्षा, अनुसंधान, प्रशिक्षण और परामर्श के लिये सुविधाओं का सृजन करने और आपरेशन फलड़ की प्रशिक्षित जनशक्ति संबंधी आवश्यकताओं के लिए की गई थी ।

संस्थान के लिये वित्तीय सहायता देने की निम्न पद्धति स्वीकृत की गई थी :--

(लाख रुपयों में)

(1) आपरेशन फलड 2 परियोजना	50.00
(2) राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड से अंशदान	50.00
(3) फोर्ड फाउन्डेशन अनुदान	20.00
(4) स्विस सरकार से सहायता	789.40
(5) ग्रामीण प्रबंध संस्थान, आनन्द द्वारा वहन किया जाने वाला उपकरण संबंधी आयात शुल्क, यदि कोई हो ।	7.35
कुल :	916.75

(ग) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् मूलत: कृषि अनुसंधान का कार्य करती है। कृषि विश्वविद्यालय राज्य स्तर के संस्थान

हैं और वे मूलत: सम्बंधित राज्य की वैज्ञानिक/तकनीकी जनशक्ति संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये बनाये जाते हैं। ग्रामीण प्रबंध संस्थान, आनन्द में पाठ्यक्रम का विषय कृषि विश्वविद्यालयों आदि में विद्यमान पाठ्यक्रम से भिन्न होता है । उसमें विद्यार्थियों को ग्रामीण उत्पादक संगठनों के गठन और प्रबंध के लिए प्रशिक्षित और तैयार किया जाता है और इन्हें स्वैच्छिक एजेंसियों का नाम दिया जाता है । इसमें मात्र कृषि की तुलना में बहुत व्यापक रेंज में विषयों की व्यवस्था है ।

(घ) जी हां । बोर्ड आफ गवर्नर्स के सदस्य बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों और स्नातकों में से लिये जाते हैं ।

प्रयोगशाला से उपयोगशाला तक के कार्यक्रम

391. **डा. बापू कालदाते** : क्या कृषि मंत्री 7 मार्च, 1986 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 1308 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश के सभी शेष जिलों में कब तक एक-एक कृषि विज्ञान केन्द्र के स्थापित किये जाने की संभावना है;

(ख) 116 प्रयोगशाला से उपयोगशाला तक कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने वाले विभिन्न संगठनों के तहत कौन-कौन से अन्य कार्य किये जा रहे हैं ; और

(ग) देश में दालों तथा तिलहनों के उन्नत किस्म के बीजों की कितनी-कितनी आवश्यकता है और ये कितनी-कितनी मात्रा में उपलब्ध है इन बीजों की कितने एकड़ खेती बढ़ी है और इसके परिणामस्वरूप, उत्पादन कितना बढ़ा है ?

कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा) : (क) आजकल देश में 89 कृषि विज्ञान केन्द्र है । प्रत्येक जिले में कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित करने के लिए प्रयास किये जा रहे है । किन्तु धन-राशि के उपलब्ध न होने के कारण इस लक्ष्य को प्राप्त करने में कुछ विलम्ब हो सकता है।

(ख) प्रयोगशाला से खेत तक कार्यक्रम एक परिवारोन्मुख कार्यक्रम है । छोटे और सीमांत किसानों को तथा भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को उपयुक्त प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण से सहायता की जा रही है जिनमें फसल उत्पादन, पशुपालन, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन, भेड़ पालन, खरगोश पालन, मधुमक्खी पालन और रेशम उत्पादन आदि जैसे कार्यक्रम सम्मिलित हैं । अंतिम लक्ष्य नई प्रौद्योगिकियों को शुरू करके अपनाये गये परिवारों की आय बढ़ाना है ।

(ग) दालों और तिलहनों को उच्च प्राथमिकता प्रदान की जा रही है और प्रयास यह किया जा रहा है कि अधिकाधिक क्षेत्र को नियोजित रीति से बीजों की सुधरी किस्मों के अन्तर्गत लाया जाय । सुधरी तिलहनों और दलहनों की आवश्यकता तथा उनकी उपलब्धता निम्न प्रकार है :—

(क्विंटल में)

क्रम सं०	वस्तु	सुधरे बीजों की आवश्यकता	सुधरे बीजों की उपलब्धता
1	तिलहनें	8.48 लाख	8.51 लाख
2	दालें	3.38 लाख	2.35 लाख